रिकॉर्ड :–रात के राही..... ओम् शांति। बच्चों को समझाया गया है कि हम हैं परमपिता प० के बच्चे। परमपिता प० का बर्थ प्लेस ही भारत है। तो ज़रूर उनके ही आकर संतान बने होंगे; जैसे अब बने हैं। अब उनकी मत पर ही चलना है। परमपिता प० एक है। बाकी सभी हैं आत्माएँ। गाया भी जाता है– आत्मा प० अलग रहे बहुकाल। तो ज़रूर बहुकाल से जो अलग रहे हैं, उनके ही तन में आएँगे। और कोई तन में आए न सके। दो आत्माओं का खेल होने कारण मनुष्य मूँझते हैं। तो उन्हों को समझाया जाता है कि भगवान किसको कहा जाता है। भगत तो बहुत हैं। इस समय भक्तिमार्ग है। भगत भगवान को याद करते हैं। भगवान तो एक ही है, जिस(को) गॉड फादर कहा जाता है। जो भी आते हैं, उन्हों को युक्ति से, धैर्य से समझाना है। बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो (झ)ट से पूछ लेते हैं कि तुमको मालूम है कि तुमको दो बाप हैं? ये एक गाली भी हो जाती है। तो बात करने में बड़ी मीठी श... चाहिए। वर्शन्स जो निकले, वो अनमोल। एक गीत है ना– पीऊ–2 बोल, पीऊ का बोल बड़ा अनमोल.... पिऊ कहा जाता है बाप को। वो ज्ञान सागर आए समझाते हैं। उनके बोल अनमोल हैं; परन्तु कोई समझते हैं, कोई नहीं समझते हैं। न समझते भी अपन को बड़ा समझू समझ बैठे हैं। उन वेद–शास्त्रों के बोल कोई अनमोल नहीं हैं। बाप समझाते हैं, वो तो वैल्युलेस हैं। वो सभी वर्थ नॉट ए पैनी हैं। सिर्फ ज्ञान के सागर, बाप जो आए सुनाते हैं वो पिऊ के बोल अनमोल हैं। बाकी शास्त्रों के ज्ञान से कोई मुक्ति–जीवनमुक्ति नहीं मिल सकती है। जीवनमुक्ति मिलती है पिऊ के बोल से। ज्ञान सागर वो एक है। वो जब ज्ञान की वर्षा आदि बरसाते हैं और योग सिखाते हैं तब मनुष्य पतित से पावन हो सकते हैं। बाप समझाते हैं, पतित मनुष्यों के बनाए हुए वेद–शास्त्र, उपनिषद से तो पतित बने हो। वो सब वैल्युलेस हैं, जो कौड़ी जैसी जीवन बनाते हैं। इनको आइरन एज्ड, तमोप्रधान बुद्धि कहा जाता है। वेद–शास्त्र पढ़ते–2 मनुष्य आइरन एज्ड बुद्धि बन गई है। करप्टेड बुद्धि बन गए हैं। अब वो स्थूल करप्शन तो गवर्मेन्ट जान सकते हैं और वो शास्त्र सुनाने वाले साधु आदि क्या करप्शन करते हैं, वो गुरुओं का गुरु सतगुरु परमपिता प० जान सकता है। वो आकर ज्ञान यज्ञ रचते हैं। यज्ञ तो बहुत रचे गए हैं। बॉम्बे में भी एक आया था, कहता था– मैं एक सौ पच्चीसवाँ यज्ञ रचता हूँ; परन्तु वो तो यज्ञ रचकर और फिर खलास कर देते हैं। पिछाड़ी में भी जो कुछ बचता है वो आहूति डाल यज्ञ समाप्त कर देते हैं। आहूति का अर्थ ही है, बाकी बची हुई सामग्री यज्ञ में डाल कर खतम कर देते हैं। उस दिन ढिंढोरा पिटवाते हैं कि आज आहूति पड़ती है। अब ये तो है अविनाशी ज्ञान यज्ञ। इनका कभी विनाश नहीं होता। जबसे आए हैं एक ही यज्ञ चलता रहता है। ऐसे नहीं, एक यज्ञ समाप्त कर फिर दूसरा यज्ञ रचते हैं। नहीं। ये तुम बच्चे जानते हो कि मैंने ये ज्ञान यज्ञ रचा है। शिव भगवानुवाच ये अविनाशी यज्ञ है, चलता ही रहता है। जब तक महाभारी लड़ाई न लगी है तब तक ये यज्ञ चलना ही है; क्योंकि इसमें सारी आसुरी सृष्टि की आहूती पड़नी है। कलियुगी तमोप्रधान प्रकृति की सभी वस्तु आहुति हो जाएँगी, तब ये यज्ञ समाप्त होगा। वो लोग तो अनेक प्रकार के यज्ञ रचते हैं और समाप्त करते हैं। बाबा कहते हैं, मैं अविनाशी हूँ तो मेरा यज्ञ भी अविनाशी है। उनका नाम ही है अविनाशी रुद्र ज्ञानयज्ञ। जब तक मैं हूँ तब तक ये चलना ही है और जब तक पूरी आहूति न पड़ी है, ये चलना ही है। इस यज्ञ से ही ये विनाश ज्वाला निकलेगी। नैचरल कैलेमिटीज़ आदि भी पूरी होगी, तब ये यज्ञ ... समाप्त होगा। फिर जयजयकार होगी और स्वर्ग के द्वार खुल जाएँगे। जितना–

जितना वो मनुष्य यज्ञ रचेंगे उतनी हाहाकार मचती जाएगी। ये सभी उन्हों के अल्पकाल के यज्ञ हैं। ये कितना बड़ा यज्ञ है। उसमें आहुति भी इतनी बड़ी प(ड़नी) है। ये है बेहद का ईश्वरी(य) यज्ञ। वो सभी हैं मनुष्यों के यज्ञ। ये गॉडफादर ने खुद रचा है ब्राह्मणों द्वारा। वो तो ब्रह्मा–विष्णु–शंकर का भी रचता है। अब वो तो है सूक्ष्मवतन वासी। प्रजापिता ब्रह्मा कहाँ से आए? प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए ना, जिससे ब्राह्मण पैदा हो। तो कितना बड़ा यज्ञ बाप ने रचा है। अब ब्राह्मण जो यज्ञ रचते हैं, वो सेठ को तो याद करेंगे ना कि फलाणे सेठ ने यज्ञ रचाया है। वो लोग तो मिट्टी का लिंग बनाए उनकी पूजा करते हैं। वो तो है भक्तिमार्ग। बाप कहते हैं, ये तो है चेतन जीव आत्माओं कहें वा सालिग्राम कहें, तो उनको बैठ पढ़ाते हैं। इन कानों से वो सुनते हैं। ऐसे तो कोई समझाए न सके। भल अपन को शिवोहम् कहते हैं; परन्तु मैं तो ज्ञान का सागर हूँ। ब्रह्मा तन द्वारा सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान देता हूँ और अपन साथ योग लगाना सिखाता हूँ। वो साधु लो(ग) तो अपना चित्र देते हैं और अपने साथ योग ....वाते हैं। अब बाप कहते हैं, तुम मेरे बच्चे तो हो ना। सभी का मैं एक ही बाप हूँ, बाकी सभी भाई–बहन हैं। सन्यासी भी ऐसे कहेंगे ना, उनमें भी अब माइयाँ सन्यासिन बनती हैं तो वो भी भाई–बहन ठहरे ना। बाकी वो क्या कहते हैं, कुछ कह नहीं सकते। बाकी यहाँ रचता तो एक बाप है। वर्सा बाप से मिलता है। कोई भी आए तो प्यार से समझाना है। तेरा बाप कौन है? जिसको सभी याद करते हैं। उनसे वर्सा लेने लिए ही उनको याद किया जाता है। उनसे कोई पुत्र माँगते हैं, कोई हेल्थ माँगते हैं। अक्सर काली, शीतला आदि देवियों पास जाते हैं। जिनकी आँखें खराब होती हैं, उनपर चाँदी की आँखें चढ़ाते हैं। घाटा डलवाते हैं। अब ये रिवाज़ भी कहाँ से निकला? इस समय सभी अंधे हैं। तुम देवियाँ उनको दिव्य चक्षु देती हो, अंधों की लाठी बन सज्जा करती हो। शीतल बनाए देती हो। शीतल आँखें मिलने से उनको स्वर्ग का सा० होता है। अब तो सभी तवे तवा हैं। इन आँखों से जहन्नुम देखते हैं। बाबा आकर इन शक्तियों को ज्ञान का कलश देते हैं तो दोजख की आँखों को दिव्य दृष्टि मिल जाती है। तो फिर वैकुण्ठ देखते हैं। इस समय मनुष्य तो हैं ही अंधे के औलाद अंधे। न बाप को, न बाप के वर्से स्वर्ग को देख–जान सकते हैं। हम भी अंधे थे, बाप ने हमको भी आँखें दी हैं। अब हम शीतल हो जाएँगे। विकारों की खाद निकल जाएगी तो हम शीतल दुनिया में चले जाएँगे। बातें सभी यहाँ की हैं। हर एक देवी की महिमा अलग–2 है। इस समय में शक्तियाँ बैठ तवे–2 को अथवा काम चिक्षा में जलने वालों को शीतल बनाती है। इस समय सब जल रहे हैं। ज्ञान की बरसात चाहिए। इससे पतित से पावन, काले से गौरा बन जाते हैं। बाबा की समझाणी तो बहुत अच्छी मिलती रहती है; परन्तु जब कोई धारण भी करे। जब बाप इतनी प्वाइंट्स देते हैं, फिर अपनी प्वाइंट्स निकाल सुनाने की क्या दरकार है! कोई तो अपनी अच्छी भी सुनाते हैं, कोई राँग भी सुनाते हैं। तो बाप समझाते हैं, ये बरोबर अविनाशी ज्ञान यज्ञ है। इसमें आहुति सभी की पड़नी है। राम गयो, रावण गयो। इसमें तो सभी शरीरों की आहुति पड़नी है। आत्मा तो अविनाशी है, उन सबसे खाद निकल जाएगी। अब गर्भजेल में तो नहीं जाकर भागेंगी। स्वर्ग में तो गर्भ जेल होता नहीं है। वो गर्भ तो जैसे बहिस्त है। कलियुग में आत्मा गर्भ में शरीर लेकर अनेक प्रकार के सा० द्वारा सज़ाएँ भोगती हैं। फिर त्राह–2 करती हैं। ये तो बाबा ने सब सा० भी कराए हैं। परमपिता प० खुद धर्मराज का रूप धारण कर सज़ाए देते हैं;

परन्तु ऐसे नहीं, सारी सृष्टि के रूप धरते हैं। जैसे बाबा भक्तिमार्ग में सा० कराते हैं, तो ऐसे नहीं कि आत्मा कही जाती है। ड्रामा में ये सा० भी नूँधे हुए हैं। वो ड्रामा अनुसार सा० होते हैं। फिर कह देते, परमपिता प० ने सा० कराया। हम कहेंगे, ड्रामा अनुसार इनको सा० हुआ; परन्तु इनसे कुछ फायदा नहीं। सिर्फ एम–ऑब्जेक्ट का सा० होता है कि अच्छी रीत पढ़ेंगे तो ऐसे बनेंगे। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा का और कृष्ण का सा० होता है। प्रिंस का सा० हो वा युगल विष्णु का हो, बात एक ही है। फिर समझाने की बात है। नर से ना०, नारी से लक्ष्मी बनना है; परन्तु फिर भी पुरुषार्थ करना है। भक्तिमार्ग के सा० की तो कोई वैल्यु नहीं। हम तो जानते हैं, ये पुरुषार्थ से ऐसा पद पाना है। भक्ति माल में भी तीव्र भक्तों की माल बनती है। ये है रुद्र माल पूज्य की। ये ट्रांसफर होती है। भक्त माल ट्रांसफर नहीं होती। हमारी तीन माला बनती हैं। मनुष्य जब मोतियों की भी माला बनाते हैं तो बीच में बड़े दाणे होते हैं फिर छोटे–2 होते जाते हैं। उसमें भी दाणा डाल देखते हैं, एक/दो में मेल खाते हैं, फिट बैठता है, नहीं तो बदली करते हैं। एक/दो में मैच करने पड़ते हैं। बाबा जवाहरी है तो अनुभव है। यहाँ भी ऐसे माला बनती रहती हैं। पहले ब्रह्मा की साकारी माला है। वो बदलती रहती है। बाकी रुद्र की माला और विष्णु की माला एक्युरेट होती हैं। ये तीन प्रकार की यहाँ माला बनती हैं। वो भगत माल तो पुजारी भक्तों की है। वो कभी पूजी नहीं जाती, सिर्फ नाम है शास्त्रों में। पूजी ये जाती है। बाप सभी बच्चों को समझाते हैं। सभी सेन्टर्स के बच्चे आगे खड़े हैं। मुरली तो सभी सुनेंगे। बाकी सन्मुख सुनने का मज़ा अच्छा आता है; परन्तु सदैव सन्मुख सुनने का तो कोई ... . इतना साथ तो कोई रह न सके। समझाने वाले बड़े अच्छे चाहिए, जो झट कोई को तीर लग जाए। पहली–2 बात है बाप का परिचय देना। पहले पूछना चाहिए, तुम भक्ति किसकी करते हो? भगवान किसको कहा जाता है? भगवान को परमप्रिय, परमपिता तो सभी कहते हैं। वो है परमधाम में रहने वाला। ऐसे समझाने से दो बाप तो खुशी से मानेंगे। फिर पूछना है कि बड़ा फाद(र) कौन है? छोटे (लौकिक) फादर को तो सभी जानते हैं। कुत्ते–बिल्ली भी जानते हैं। बड़े बाप को तो मनुष्य ही जान सकते हैं। कुत्ते–बिल्ली तो नहीं जान सकते। तो समझाना चाहिए, जिस बाप ने तुमको भेजा उनको कैसे भूले हो? वो तो स्वर्ग का क्रियेटर है। उस बेहद के बाप को क्यों भूले हो? अब हम आपको रास्ता बताते हैं। बीती सो बीती देखो। उस बाप को याद करो। लौकिक बाप को याद करते–2 पारलौकिक बाप को भूल गए हो। अब बाप ने तुम बच्चों को समझाया कि कैसे समझाओ। सन्यासी तो कह न सके। तो तेरे दो बाप हैं। वो तो अपन को ही बाप कह देते। तुम समझाती हो, जिस बाप को भूले हो वो बाप बेहद का वर्सा बच्चों को देने आए हैं। वो है पारलौकिक बाप। अब वो आए हैं और कहते हैं, मुझे याद करो। ये याद बुद्धि में रहती है। याद नहीं रहती तो बताए नहीं सकते, न वो खुशी रहती है। बहुत विकर्म भी होते हैं। बाप को याद करने से कभी विकर्म नहीं होंगे। एक तो वो बाप है, दूसरा वो धर्मराज भी है। दैवीकुल में बदनामी भी होती है। जैसे कोई जेल में जाता है तो बदनामी होती है ना। चेहरा ही फीका पड़ जाता है। यहाँ की बदनामी तो जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर लिए काला दाग लगाए देती है। इसलिए ऐसी भूल नहीं करनी चाहिए। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ